रविवार 22 दिसंबर, 2019

विषय — क्या ब्रह्मांड, मनुष्य सहित, परमाणु बल द्वारा विकसित है?

स्वर्ण पाठ: **भजन संहिता 114 : 7**

"*हे पृथ्वी प्रभु के साम्हने, हां याकूब के परमेश्वर के साम्हने थरथरा।*"

उत्तरदायी अध्ययन: **भजन संहिता 107 : 21-25, 28-30, 43**

21 लोग यहोवा की करूणा के कारण और उन आश्चर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसका धन्यवाद करें!
22 और वे धन्यवाद बलि चढ़ाएं, और जयजयकार करते हुए, उसके कामों का वर्णन करें॥
23 जो लोग जहाजों में समुद्र पर चलते हैं, और महासागर पर होकर व्यापार करते हैं;
24 वे यहोवा के कामों को, और उन आश्चर्यकर्मों को जो वह गहिरे समुद्र में करता है, देखते हैं।
25 क्योंकि वह आज्ञा देता है, वह प्रचण्ड बयार उठकर तरंगों को उठाती है।
28 तब वे संकट में यहोवा की दोहाई देते हैं, और वह उन को सकेती से निकालता है।
29 वह आंधी को थाम देता है और तरंगें बैठ जाती हैं।
30 तब वे उनके बैठने से आनन्दित होते हैं, और वह उन को मन चाहे बन्दर स्थान में पहुंचा देता है।
43 जो कोई बुद्धिमान हो, वह इन बातों पर ध्यान करेगा; और यहोवा की करूणा के कामों पर ध्यान करेगा॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 46: 1-3 (*से 1st.*), 4-7 (*से 1st.*), 10, 11 (*से 1st.*)

1 परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक।
2 इस कारण हम को कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए, और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएं;

3 चाहे समुद्र गरजे और फेन उठाए, और पहाड़ उसकी बाढ़ से कांप उठें॥
4 एक नदी है जिसकी नहरों से परमेश्वर के नगर में अर्थात परमप्रधान के पवित्र निवास भवन में आनन्द होता है।
5 परमेश्वर उस नगर के बीच में है, वह कभी टलने का नहीं; पौ फटते ही परमेश्वर उसकी सहायता करता है।
6 जाति जाति के लोग झल्ला उठे, राज्य राज्य के लोग डगमगाने लगे; वह बोल उठा, और पृथ्वी पिघल गई।
7 सेनाओं का यहोवा हमारे संग है; याकूब का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है॥
10 चुप हो जाओ, और जान लो, कि मैं ही परमेश्वर हूं। मैं जातियों में महान हूं, मैं पृथ्वी भर में महान हूं!
11 सेनाओं का यहोवा हमारे संग है; याकूब का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है॥

2. निर्गमन 3: 1-7, 10-12 (*से*;), 15 (*से*:)

1 मूसा अपके ससुर यित्रो नाम मिद्यान के याजक की भेड़-बकरियोंको चराता या; और वह उन्हें जंगल की परली ओर होरेब नाम परमेश्वर के पर्वत के पास ले गया।
2 और परमेश्वर के दूत ने एक कटीली फाड़ी के बीच आग की लौ में उसको दर्शन दिया; और उस ने दृष्टि उठाकर देखा कि फाड़ी जल रही है, पर भस्म नहीं होती।
3 तब मूसा ने सोचा, कि मैं उधर फिरके इस बड़े अचम्भे को देखूंगा, कि वह फाड़ी क्योंनहीं जल जाती।
4 जब यहोवा ने देखा कि मूसा देखने को मुड़ा चला आता है, तब परमेश्वर ने फाड़ी के बीच से उसको पुकारा, कि हे मूसा, हे मूसा। मूसा ने कहा, क्या आज्ञा।
5 उस ने कहा इधर पास मत आ, और अपके पांवोंसे जूतियोंको उतार दे, क्योंकि जिस स्यान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है।
6 फिर उस ने कहा, मैं तेरे पिता का परमेश्वर, और इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं। तब मूसा ने जो परमेश्वर की ओर निहारने से डरता या अपना मुंह ढ़ाप लिया।
7 फिर यहोवा ने कहा, मैं ने अपक्की प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं उनके दु:ख को निश्चय देखा है, और उनकी जो चिल्लाहट परिश्रम करानेवालोंके कारण होती है उसको भी मैं ने सुना है, और उनकी पीड़ा पर मैं ने चित्त लगाया है;
10 इसलिथे आ, मैं तुझे फिरौन के पास भेजता हूं कि तू मेरी इस्राएली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए।
11 तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, मै कौन हूं जो फिरौन के पास जाऊं, और इस्राएलियोंको मिस्र से निकाल ले आऊं?
12 उस ने कहा, निश्चय मैं तेरे संग रहूंगा।
15 फिर परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, कि तू इस्राएलियोंसे यह कहना, कि तुम्हारे पितरोंका परमेश्वर, अर्यात् इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर, यहोवा उसी ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है।

3. निर्गमन 4 : 1-7

1 तब मूसा ने उतर दिया, कि वे मेरी प्रतीति न करेंगे और न मेरी सुनेंगे, वरन कहेंगे, कि यहोवा ने तुझ को दर्शन नहीं दिया।
2 यहोवा ने उससे कहा, तेरे हाथ में वह क्या है? वह बोला, लाठी।
3 उसने कहा, उसे भूमि पर डाल दे; जब उसने उसे भूमि पर डाला तब वह सर्प बन गई, और मूसा उसके साम्हने से भागा।
4 तब यहोवा ने मूसा से कहा, हाथ बढ़ाकर उसकी पूंछ पकड़, तब उसने हाथ बढ़ाकर उसको पकड़ा तब वह उसके हाथ में फिर लाठी बन गई।
5 ले कि वे लोग प्रतीति करें कि तुम्हारे पितरों के परमेश्वर अर्थात इब्राहीम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर, और याकूब के परमेश्वर, यहोवा ने तुझ को दर्शन दिया है।
6 फिर यहोवा ने उससे यह भी कहा, कि अपना हाथ छाती पर रखकर ढांप। सो उसने अपना हाथ छाती पर रखकर ढांप लिया; फिर जब उसे निकाला तब क्या देखा, कि उसका हाथ कोढ़ के कारण हिम के समान श्वेत हो गया है।
7 तब उसने कहा, अपना हाथ छाती पर फिर रखकर ढांप। और उसने अपना हाथ छाती पर रखकर ढांप लिया; और जब उसने उसको छाती पर से निकाला तब क्या देखता है, कि वह फिर सारी देह के समान हो गया।

4. निर्गमन 5 : 1 (*से* मूसा), 1 (चला गया) (*से 4th* ,), 2

1 इसके पश्चात मूसा ... ने जा कर फिरौन से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे।
2 फिरौन ने कहा, यहोवा कौन है, कि मैं उसका वचन मानकर इस्राएलियों को जाने दूं? मैं यहोवा को नहीं जानता, और मैं इस्राएलियों को नहीं जाने दूंगा।

5. निर्गमन 14 : 5 (*से 1st* ,), 8 (और वह) (*से* :), 10 (और यह), 13, 14, 21-23 (*से 2nd* ,), 26, 27, 31

5 जब मिस्र के राजा को यह समाचार मिला कि वे लोग भाग गए, तब फिरौन और उसके कर्मचारियों का मन उनके विरुद्ध पलट गया,
8 ... और सो उसने इस्राएलियों का पीछा किया;
10 ... और इस्राएली चिल्लाकर यहोवा की दोहाई दी।
13 मूसा ने लोगों से कहा, डरो मत, खड़े खड़े वह उद्धार का काम देखो, जो यहोवा आज तुम्हारे लिये करेगा; क्योंकि जिन मिस्रियों को तुम आज देखते हो, उन को फिर कभी न देखोगे।
14 यहोवा आप ही तुम्हारे लिये लड़ेगा, इसलिये तुम चुपचाप रहो॥

21 और मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया; और यहोवा ने रात भर प्रचण्ड पुरवाई चलाई, और समुद्र
को दो भाग करके जल ऐसा हटा दिया, जिससे कि उसके बीच सूखी भूमि हो गई।
22 तब इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल पर हो कर चले, और जल उनकी दाहिनी और बाईं ओर दीवार
का काम देता था।
23 तब मिस्री उनका पीछा किए हुए समुद्र के बीच में चले गए।
26 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा, कि जल मिस्रियों, और उनके रथों, और
सवारों पर फिर बहने लगे।
27 तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया, और भोर होते होते क्या हुआ, कि समुद्र फिर ज्यों का
त्योंअपने बल पर आ गया; और मिस्री उलटे भागने लगे, परन्तु यहोवा ने उन को समुद्र के बीच ही में
झटक दिया।
31 और यहोवा ने मिस्रियों पर जो अपना पराक्रम दिखलाता था, उसको देखकर इस्राएलियों ने यहोवा का
भय माना और यहोवा की और उसके दास मूसा की भी प्रतीति की॥

6. आमोस **4 : 13**

13 देख, पहाड़ों का बनाने वाला और पवन का सिरजने वाला, और मनुष्य को उसके मन का विचार बताने
वाला और भोर को अन्धकार करने वाला, और जो पृथ्वी के ऊंचे स्थानों पर चलने वाला है, उसी का नाम
सेनाओं का परमेश्वर यहोवा है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 583 : 20 (*से*.), 24 (परमेश्वर)-25

बनाने वाला।. ... ईश्वर, जिसने वह सब बनाया था जो स्वयं एक परमाणु या एक तत्व नहीं बना सकता था।

2. 465 : 17 (सिद्धांत)-6

सिद्धांत और उसका विचार एक है, और यह एक ईश्वर, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापी होने के नाते है, और उसका प्रतिबिंब मनुष्य और ब्रह्मांड है। ओमनी को लैटिन विशेषण के संकेत से अपनाया गया है। इसलिए भगवान सभी-शक्ति या सामर्थ्य, सभी-विज्ञान या सच्चे ज्ञान, सभी-उपस्थिति को जोड़ती है। क्रिश्चियन साइंस की विभिन्न अभिव्यक्तियाँ माइंड को दर्शाती हैं, कभी भी एक सामग्री नहीं है, और एक सिद्धांत है।

3. 507 : 21-25

एक भौतिक दुनिया एक नश्वर मन और मनुष्य को एक निर्माता बनाती है। वैज्ञानिक ईश्वरीय रचना अमर मन और ईश्वर द्वारा निर्मित ब्रह्मांड की घोषणा करती है।

अनंत मन मानसिक अणु से अनंत तक सभी को बनाता और नियंत्रित करता है।

4. 484 : 9 (में)-15

दिव्य विज्ञान में, पदार्थ के कथित नियम मन के नियम से उपजते हैं। जिसे प्राकृतिक विज्ञान और भौतिक कानून कहा जाता है, वह नश्वर मन की वस्तुस्थिति है। भौतिक ब्रह्मांड नश्वर लोगों के जागरूक और अचेतन विचारों को व्यक्त करता है। शारीरिक बल और नश्वर मन एक हैं।

5. 209 : 10-11, 16-30

मन के बिना दुनिया ढह जाएगी, बिना बुद्धि के जो अपनी पकड़ में हवाओं को रखता है।

पृथ्वी की रचना करने वाले यौगिक खनिज या एकत्रित पदार्थ, जो संबंध घटक सामग्री एक दूसरे के साथ रखते हैं, आकाशीय पिंडों की परिमाण, दूरी और क्रांतियाँ, कोई वास्तविक महत्व नहीं हैं, जब हमें याद आता है कि उन सभी को आध्यात्मिक तथ्य को मनुष्य और ब्रह्मांड के अनुवाद द्वारा आत्मा में स्थान देना चाहिए। इसके अनुपात में, मनुष्य और ब्रह्माण्ड सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत पाए जाएंगे।

भौतिक पदार्थों या सांसारिक संरचनाओं, खगोलीय गणनाओं, और सट्टा सिद्धांतों के सभी विरोधाभास, जो कि भौतिक कानून या जीवन और बुद्धि के निवासी की परिकल्पना के आधार पर, अंततः गायब हो जाएंगे, आत्मा के अनंत कलन में निगल जाते हैं।

6. 124 : 14-31

ब्रह्मांड, मनुष्य की तरह, विज्ञान द्वारा अपने दिव्य सिद्धांत, ईश्वर से व्याख्या की जानी है, और फिर इसे समझा जा सकता है; लेकिन जब भौतिक अर्थों के आधार पर समझाया जाता है और विकास, परिपक्वता और क्षय के विषय के रूप में प्रतिनिधित्व किया जाता है, तो ब्रह्मांड, जैसे मनुष्य, है और होना चाहिए, एक रहस्य है।

आसंजन, सामंजस्य और आकर्षण मन के गुण हैं। वे दिव्य सिद्धांत से संबंधित हैं, और उस विचार-शक्ति के उपसंहार का समर्थन करते हैं, जिसने पृथ्वी को अपनी कक्षा में लॉन्च किया और गर्व की लहर से कहा, "यहां तक और इसके आगे नहीं।"

आत्मा सभी चीजों का जीवन, पदार्थ और निरंतरता है। हम ताकतों पर चलते हैं। उन्हें वापस ले लें, और सृजन को ढह जाना चाहिए। मानव ज्ञान उन्हें पदार्थ की ताकत कहता है; लेकिन दिव्य विज्ञान घोषित करता है कि वे पूर्ण रूप से दिव्य मन से संबंधित हैं, इस दिमाग में निहित हैं, और इसलिए उन्हें उनके सही घर और वर्गीकरण के लिए पुनर्स्थापित करता है।

7. 200 : 4-7

मूसा ने एक राष्ट्र की बात की बजाय आत्मा में ईश्वर की आराधना के लिए उन्नत किया, और अमर मन द्वारा दी जाने वाली भव्य मानव क्षमताओं को चित्रित किया।

8. 139 : 4-9

शुरुआत से लेकर अंत तक, पवित्रशास्त्र आत्मा, मन की बात की विजय से भरपूर है। मूसा ने मन की शक्ति को उसके द्वारा सिद्ध किया, जिसे पुरुषों ने चमत्कार कहा; तब यहोशू, एलिय्याह और एलीशा ने किया। संकेत और चमत्कार के साथ ईसाई युग की शुरुआत हुई।

9. 321 : 6-2

हिब्रू लॉजिवर, भाषण की धीमी गति, लोगों को यह समझने में निराश करती है कि उसे क्या बताया जाना चाहिए। जब, अपने डंडे को गिराने के लिए प्रज्ञा ने नेतृत्व किया, तो उसने देखा कि यह नागिन बन गई है, इससे पहले मूसा भाग गया; लेकिन ज्ञान ने उसे वापस आकर सर्प को संभाल लिया, और तब मूसा का भय दूर हो गया। इस घटना में विज्ञान की वास्तविकता देखी गई थी। बात को केवल एक विश्वास के रूप में दिखाया गया था। ज्ञान की बोली के तहत नागिन, दुष्ट, दिव्य विज्ञान को समझने के माध्यम से नष्ट हो गया था, और यह सबूत एक कर्मचारी था जिस पर झुकना था। मूसा के भ्रम ने उसे खतरे में डालने की अपनी शक्ति खो दी, जब उसने पाया कि उसने जो स्पष्ट रूप से देखा था वह वास्तव में था लेकिन नश्वर विश्वास का एक चरण था।

यह वैज्ञानिक रूप से प्रदर्शित किया गया था कि कुष्ठ रोग नश्वर मन का निर्माण था और न ही पदार्थ की स्थिति, जब मूसा ने पहली बार उसकी छाती पर हाथ रखा और उसे भयानक बीमारी के साथ बर्फ की तरह सफ़ेद कर दिया, और वर्तमान में एक ही सरल प्रक्रिया द्वारा अपनी प्राकृतिक स्थिति के लिए अपने हाथ को बहाल किया। ईश्वरीय विज्ञान में इस प्रमाण से ईश्वर ने मूसा का भय कम कर दिया था, और भीतर की आवाज़ उसे ईश्वर की आवाज़ बन गई, जिसने कहा: "यदि वे तेरी बात की प्रतीति न करें, और पहिले चिन्ह को न मानें, तो दूसरे चिन्ह की प्रतीति करेंगे।" और इसलिए यह आने वाली शताब्दियों में था, जब यीशु द्वारा विज्ञान का प्रदर्शन किया जा रहा था, जिसने अपने छात्रों को शराब में पानी बदलकर माइंड की शक्ति को दिखाया, और उन्हें सिखाया कि कैसे नागों को संभाला जाए, बीमारों को ठीक किया जाए और बुराइयों को बाहर निकाला जाए। मन की सर्वोच्चता के प्रमाण में।

10. 566 : 1-24

चूंकि लाल सागर के माध्यम से इज़राइल के बच्चों को विजयी रूप से निर्देशित किया गया था, इसलिए मानव भय के अंधेरे और बहते ज्वार, — क्योंकि वे जंगल से होकर निकले थे, जो मानवीय आशाओं के महान रेगिस्तान से थके हुए थे, और वादा किए गए आनन्द की आशा करते थे,— इसलिए आध्यात्मिक विचार आत्मा से अस्तित्व की भौतिक भावना से लेकर आत्मा तक, भगवान से प्रेम करने वाले उनके लिए तैयार किए गए गौरव तक, आत्मा से उनके मार्ग में सभी सही इच्छाओं का मार्गदर्शन करेगा। स्टेलीस साइंस रुकता नहीं है, लेकिन उनके सामने चलता है, दिन में बादल का एक स्तंभ और रात में आग से, दिव्य ऊंचाइयों तक ले जाता है।

यदि हमें सुंदर वर्णन याद है, जो इवान्हो की कहानी में सर वाल्टर स्कॉट ने रेबेका यहूदी के मुंह में डाल दिया,

जब इस्राएल, प्रभु का प्रिय,
बंधन की भूमि से बाहर आया,
उसके पिता के भगवान उसके जाने से पहले,
एक भयानक गाइड, धूम्रपान और लौ में, —

हम भी प्रार्थना की पेशकश कर सकते हैं जो एक ही भजन का समापन करता है, —

और ओह, जब यहूदा के रास्ते पर रुकते हैं
लगातार रात में छाया और तूफान में,
तू, दीर्घजीवी, क्रोध से मंद,
एक जलती हुई और एक चमकदार रोशनी!

11. 503 : 12-15

ईश्वरीय विज्ञान, ईश्वर का शब्द, त्रुटि पर अंधेरे के लिए कहता है, "ईश्वर सब में है," और हमेशा मौजूद प्रेम का प्रकाश ब्रह्मांड को प्रकाशित करता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6